६६: अनुगमन-२ सूक्ष्म से कारण

दिनांक -०४-०३-२०१२

सूक्ष्म का तात्पर्य आशा, विचार, इच्छा के अनुसार जीना, इसमें विकसित चेतना में प्रवेश मानव चेतना के रूप में स्पष्ट कर दिया है | यह अर्थ बोध पूर्वक संभव होता है | कारण का मतलब ही बोध, अनुभव, प्रमाण के साथ जीना है | बोध का मतलब ही है बुद्धि सहज पूर्ण जागृति | बोध, अनुभव, प्रमाण ही मानव परम्परा में क्रियापूर्णता, आचरणपूर्णता का प्रमाण है | इस क्रम में मानव में जागृतिपूर्ण चेतना विधि से जीना बनता है | मानव ही विकसित चेतना को पहचानता है न कि जीव जानवर | इसको अच्छी तरह से परिशीलन किया है | हर मानव विकसित चेतना को परिशीलन करने योग्य है और मानव संतान भी विकसित चेतना को परिशीलन करने योग्य है | मानव परम्परा में मुख्यतः शिक्षा, व्यवस्था, संविधान में जागृत चेतना का शिक्षा एवं सूचना की आवश्यकता है | अभी तक मानव परम्परा में सभी समुदाय सूचना के रूप में शुभ को चाहा है | अध्ययनगम्य कराने में असमर्थ रहा है | मानव जाति का पहचान विकसित चेतना के रूप में ही है | जीव चेतना विधि से हर समुदाय जीवों से अच्छा जीने का प्रयत्न किया है |

जीवों से अच्छा जीने में आहार, आवास, अलंकार, दूरगमन, दूरश्रवण, दूरदर्शन इनका संयुक्त नाम दूरसंचार प्राप्त हो गया है | इसके लिये आवश्यकीय सभी साधन जैसा सड़क आदि उपलब्ध हो गया है | इन सबको पाकर के मानव अपने को विकसित मानता है | यह चेतना विधि से जीव चेतना ही है | मानव का सभी प्रवृत्ति इसी में समाया है | यह सकारात्मक भाग है | इसमें नकारात्मक भाग ज्यादा समाया है | पहला लाभोन्मादी, भोगोन्मादी, कामोन्मादी प्रवृत्ति है, यह बच्चों से लेकर बूढों तक नकारात्मक पक्ष में ही है या सामायिक पक्ष में है | सर्वसमय के लिये यह प्रवृत्ति पर्याप्त नहीं हुआ अथवा सर्वमानव, सर्वदेश के लिये पर्याप्त नहीं हुआ | इसमें आगे संघर्ष और युद्ध हर समुदाय ने अपनाया है | कोई कोई इससे विरत होने के लिये भी सोच रहे हैं | विरत होकर क्या करना है यह स्पष्ट नहीं है | यही अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य है | इन्हीं समस्याओं से मुक्ति पाने के लिये भ्रम-मुक्ति, अपराध-मुक्ति के मार्ग के रूप में चेतना विकास मूल्य शिक्षा को मानव सम्मुख प्रस्तुत किया है | यह अस्तित्व मूलक मानव केंद्रित चिंतन, साधना, समाधि, संयम पूर्वक प्राप्त उपलब्धि है | यद्यपि यह एक व्यक्ति किया है अर्थात साधना, समाधि, संयम कार्य को एक ही व्यक्ति किया है | इसे हर व्यक्ति अपना सकता है | इसलिए इसे चिंतन, अनुसंधान नाम दिया है | ऐसे विकल्पात्मक चिंतन, अनुसंधान, अनुभव के आधार पर शिक्षण विधि, आचरण विधि, व्यवस्था विधि, संविधान विधि को प्रस्तुत किया है | यही मनुष्य का अनुभवमूलक प्रमाण, विचारमूलक प्रमाण, व्यवहारमूलक प्रमाण सर्वशुभ के अर्थ में शिक्षा विधि को प्रस्तुत किया तभी मानव अपराध एवं भ्रम-मुक्त होने की सम्भावना है |

सर्वमानव अथवा सर्वाधिक मानव भ्रम-मुक्त, अपराध-मुक्त होना ही अखण्डता, सार्वभौमता का प्रकाशन है | इस विधि से मानव ही जागृत चेतना विधि से प्रायोजित होना बनता है क्योंकि अभी तक मानव ही अपराध एवं गलती किया है | पदार्थ, जीव तथा प्राण अवस्था अपना अपना कर्तव्य को पूरा किया है जिसका अध्ययन करने से, परीक्षण करने से यह पता चला कि पदार्थावस्था, प्राणावस्था, जीवावस्था का प्रत्येक इकाई उपयोगिता, पूरकता विधि से व्यवस्था में भागीदारी कर ही रहा है | मानव अब तक अपना उपयोगिता, पूरकता को पहचानने में सफल नहीं हुआ | यह भी पता चला कि मानव शुभ के अर्थ में प्रयत्नशील है | समझदारी अभी तक नहीं है | समझदारी ही प्रमाण रूप में होता है | हर मानव आबाल वृद्ध प्रौढ़ अवस्था में

अपने अपने दायित्वों कर्तव्यों को पूरा करने के क्रम में समर्थ होना पाया जाता है | दूसरा कोई विधि नहीं है | यह बात अवश्य हुआ कि बहुत सारा व्यक्ति अथवा सभी व्यक्ति अपराध को वैध मानने से अथवा गलती को वैध मानने से मानव अपने कार्यों से उपकृत नहीं हुआ तथा बाकी तीनों अवस्थाओं के साथ जीना बना नहीं | इसी कारणवश अथवा घटनावश धरती बीमार हो गयी, प्रदूषण छा गयी | मानव जात में अर्थात ज्ञानी, विज्ञानी, अज्ञानी के रूप में देखने को मिलता है |

इनमें कृत, कारित, अनुमोदित विधि से कायिक, वाचिक, मानसिक रूप में अपराध का ही समर्थक होना, युद्ध का समर्थक होना प्रमाणित हो चुका है | अभी तक युद्ध-मुक्त, अपराध-मुक्त संविधान किसी परम्परा में तैयार नहीं हो पाया है | विकल्प विधि से मानवीय आचार संहिता रुपी संविधान को मानव सम्मुख अध्ययनार्थ प्रस्तुत किया है | इसे हर व्यक्ति परीक्षण कर सकता है | सर्वाधिक व्यक्ति, हर समुदायों में अपराध-मुक्त होना ही अखण्ड समाज का रास्ता है | इसके लिए चेतना विकास अनिवार्य है | मानव में न्याय में जागृति के अनंतर ही धर्म में जागृत होता है | धर्म का तात्पर्य सर्वतोमुखी समाधान ही है | धर्म में जागृति के बाद ही सत्य में पूर्ण जागृत होना होता है | यही अवधारणा, बोध और अनुभव रूप में चेतना विकास क्रम का महिमा है | यह सब न्याय धर्म सत्य के सयुंक्त रूप में ही होना होता है | यही विकसित चेतना की श्रृंखला है | इसी के लिए अध्ययन है | इसी के लिए शिक्षा एवं दीक्षा है | मानव चेतना सहज शिक्षा एवं दिव्य चेतना सहज दीक्षा है | इस विधि से हम अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था को पाने योग्य होते हैं |

सर्वशुभ हो! जय हो! मंगल हो! कल्याण हो!

ए. नागराज